श्री गुरु चरणकमलेभ्यो नमः

❋ गौ रक्षा उपाय ❋

नमस्ते जायमानायै जातायै उत ते नमः ।
वालेभ्यः शफेभ्यो रूपाय अघ्न्ये ते नमः ॥ १ ॥

हिं कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्,
दुहा मश्विभ्यां पयोऽघ्न्येयं, सा वर्धतां महते सौभगाय ॥२॥

गावो ममाग्रतः सन्तु गावो मे सन्तु पृष्ठतः ।
गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट ॥

गावस्तिष्ठति यत्रैव तत्तीर्थं प्रकीर्तितम् ।
प्राणांस्त्यक्त्वा तत्र सद्यो मुक्ति भागी भवेद्ध्रुवम् ॥
यस्यैकापि गृहे नास्ति धेनुर्वत्सानुचारिणी ।
मंगलानि कुतस्तत्र कुतस्तत्र तमक्षयः ॥
गवां ग्रास प्रदानेन स्वर्गे लोके महीयते ।

छप्पय ।

तृण जो दन्त पर धरहीं , तिनहिं मारत सबल कोई ।
हम नित प्रति तृण चरहिं , बैन उच्चरहिं दीन होई ॥
हिन्दु हिं मधुर न देहिं , कटुक तुरकन न पिलावहिं ।
पय विशुद्ध अतिस्रव हिं, वच्छ महिथम्भन जावहिं ॥
सुन शाह अकबर, अरज,यह, करत गौ जोरे करन ।
सों कौन चूक मोहे मारियत, मुये चाम सेवहु चरन ॥

गौ की पुकार ।

दांतों तले तृण दाब कर हैं दीन गायें कह रहीं ।
"हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुम को यहीं ?
हमने तुम्हें मां की तरह है दूध पीने को दिया,
देकर क़साई को हमें तुमने हमारा वध किया।॥
"क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं, बलहीन हैं,
मारो कि पालो, कुछ करो तुम, हम सदैव अधीन हैं।
प्रभु के यहां से भी कदाचित् आज हम असहाय हैं,
इस से अधिक क्या कहें, हा ! हम तुम्हारी गाय हैं ॥

गौ रक्षा स्कीम ॥

जो कि

माननीय श्री पं० मदन मोहन मालवीय जी की आज्ञानुसार
भक्त नन्दकिशोर भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा
ने बनायी।

माघ सम्वत् १९८२

ओ३म्

श्रीमान् जी !

हिन्दु महा सभा की गोरक्षा उपसमिति की बैठक में १५-५-२५ को मुझ पर और लाला रामजीदास पर गोरक्षा की स्कीम तय्यार करने का भार सौंपा गया था इस समय तक ला० रामजीदास को इस आवश्यक कार्य में योग देने का अवकाश नहीं मिलसका था इसलिये देरी हुई आशा है आप क्षमा करेंगे अकाल गोकष्टनिवारिणी सभा का काम करते हुये सं० १९७४ में हमने गोरक्षा की एक स्कीम तय्यार की थी उसकीएक प्रति आप की सेवा में भेजता हूं आप इसे भी देख लीजये।

इस के अतिरिक्त मुझ को कुछ समय श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और वहां पर गौरक्षा के अमली काम का जो अनुभव मुझे प्राप्त हुआ है उसको अपने विचारों से मिलाकर श्री मालवी जी की आज्ञा से आपकी सेवामें भेजताहूं। इसलिये कृपया आप इन विचारों को समझ कर जो कुछ इसमें कमी हो या जो कुछ अनावश्यक हो सो आप लिख कर हिंदू महा सभा जो देहली में होनी निश्चय है उसके ८ रोज पहले एक प्रति मेरे पास भेज देवें और एक हिन्दू सभा के मंत्री के पास भेज देवें ताकि आप की बात पर विचार हो कर सभा में यह पास हो जावे।

आपका दास

भक्त नंदकिशोर

हिन्दू धर्म और हिन्दू जाति और हिन्दु स्थान से गौ का जो सम्बन्ध है उस के विषय में केवल इतना कह देना ही पर्याप्त है कि यह धर्म यह जाति और यह देश गो माता के आधार पर है। पश्चिमी देशों के वैज्ञानिकों ने यह बात निर्विवाद स्वीकृत की है कि गो दुग्ध सर्वोत्तम है। मुझे आशा है कि गो रक्षा के प्रश्न को अब केवल काग़ज़ों में ही नहीं रक्खा जायगा वरन कुछ व्यवहारिक कार्यों में भी किया जायगा और गो हत्या के मुख्य मुख्य कारणों पर पूर्ण विचार करके उन की निवृत्यर्थ पूर्ण उपाय किया जायगा॥

गोहत्या के मुख्य कारण।

१ गोचर भूमि का न होना।
२ उत्तम नशल का नष्ट होजाना।
३ गो शालाओं की एक प्रतिनिधि सभा का न होना।
४ गोवों का बधिकों के हाथ में जाना और विदेश में चमड़ा जाना।
५ निःस्वार्थशिक्षकों का अभाव।
६ मुसलमानों की हठधर्मी।
७ अकाल।
८ गोपालन विधि को न जानना।
९ फौज़ों के लिये गोबध होना।

१ गोचर भूमि का न होना।

गौवों के लिये गोचर भूमि प्रत्येक ग्राम में होनी चाहिये आज कल नगरों की तो बात ही क्या है। जंगल में स्वच्छन्द रहने वाली गौवें गोचर भूमि के अभाव से अपने स्थान पर अथवा गांव के आस पास गन्दे स्थानों पर खड़ी रहती हैं। मेरे विचार में तो गौ हत्या का मुख्य कारण गोचर भूमि का अभाव है। प्रत्येक ग्राम में जमीदार लोग जमीन छोड़ सकते हैं और इस कार्य में गवरन्मेण्ट भी हमारा बहुत हाथ बटा सकी है। जिला गुड़गांवा में (कदाचित पंजाब भर में) यह कानून बन गया है कि कोई जमीदार यदि जंगल छोड़े तो जितनी भूमि वह छोड़ता है उस से ड्योढी भूमि का माल माफ कर दिया जाता है। उस भूमि में सरकार वृक्ष लगावेगी। वटादि वृक्षों से और और लाभों के अतिरिक्त यह भी लाभ हैं कि प्रथम तो जैष्ठ मास की कड़ी धूप में गौ उन के नीचे विश्राम कर सकी हैं। दूसरे वृक्ष अपनी जड़ों द्वारा पानी खैंच कर सूर्य को देते हैं जिस से वर्षा अधिक होगी वर्षा के अधिक होने से तृण अच्छा होगा। गवरन्मेण्ट उस भूमि में वृक्ष लगा कर १५ वर्ष पीछे उस ज़मीदार को ही दे देगी। यदि हमारे माननीय नेता इस ओर ध्यान देंगे तो अवश्य इस से बहुत लाभ हो सका है प्रयत्न करने से बहुत गोचर भूमि छुट सकी है। इस का प्रत्यक्ष प्रमाण हमने

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी में देखा है वहां थोड़े से प्रयत्न से कोई ७०० बीघे गोचर भूमि छुट गई है। और भी दस बारह ग्रामों में ज़मीन छोड़ी गई हैं जिन की रजिष्ट्री सभा के नाम हो गई है।

आज भारत में जहां कामधेनू गौ होती थी वहां नशल इतनी खराब हो गई है कि आध,आध सेर और इस से न्यून दूध देने वाली गौ हो गई हैं। यदि अच्छी नशल को बहुत दूध देने वाली अच्छे बैल पैदा करने वाली गौ होवे तो अधिक मूल्य होने के कारण बधिकों के हाथों में भी पड़ने से बचेंगी। अच्छी नशल पैदा करने के निम्न उपाय होसक्ते हैं

(क) गो शाला, गुरुकुल, ऋषि कुल, सांभरमति आश्रम कालिजों आदि श्रेष्ट स्थानों में जहां दुग्ध की आवश्यकता होती हैं वहां अच्छी नशल की गौ रक्खी जावें और शुद्ध दूग्ध के लाभ के साथ साथ नशल भी उत्तम बनाने का पूरा प्रयत्न किया जावे।

(ख) सांड बहुत अच्छे होने चाहियें। आज कल एक बुरी प्रथा पड़ गई है हिन्दू लोग सांड छोड़ना धर्म समझते हैं अतः वह ख़राब नशल के सांड छोड़ देते हैं। जिस का उनको भी कष्ट होता है और गौवों की नशल में बड़ी हानि होती है। इस का यह उपाय हो सक्ता है कि अच्छे योग्य पण्डित शास्त्र के प्रमाण और युक्तियों से सिद्ध करें कि ख़राब नशल के

सांड छोड़ने से गौ हत्या का बड़ा पाप छोड़ने वाले को लगता है।

इसी प्रकार से बिना विचारे अपात्र को अथवा बुरी नशल की गौ के दान करने से भी बड़ा पाप होता है इस विषय के लेख समाचार पत्रों में निकाले जावें और छोटे छोटे ट्रेक्ट छाप कर बांटे जावें।

(ग) जिला गुड़गांवा के सहायक डिप्टी कमिश्नर मि० ब्रेन आज कल गौवों की उन्नति के लिये बड़ा प्रयत्न कर रहे हैं यह हिसार आदि स्थानों से अच्छे सांड और अच्छी नशल की गौ मंगवा कर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के द्वारा ज़मीदारों को कम मूल्य पर दिलवाते हैं। इसी प्रकार से और ज़िलों में भी हो रहा है। रियासत जींद में तो नियम है कि जब तक स्थानीय अफसर बछड़े को न देखलें कोई सांड नहीं छोड़ सका। और और भी अच्छे अच्छे नियम बनाये जा सकते हैं। इसमें भी गवरन्मेण्ट से पूरी सहायता मिल सकती है

३ गौशालाओं की एक प्रतिनिधी सभा का न होना

गौशालाओं की एक प्रतिनिधी सभा होनी चाहिये चाहे वह हिन्दू सभा के अन्तरगत् हो चाहे पृथक्। उस सभा में जो गौशालायें सम्मिलित हों उन का एक प्रतिनिधी किया जावे। उस सभा के संचालनार्थ उन से न्यूनातिन्यून १) मासिक

चन्दा लिया जावे। उस सभा में और भी गौ भक्त अच्छे पुरुष सम्मिलित हो सकते हैं। उस सभा के निम्न कार्य हों।

(क) इस समय जो गौशालायें हैं उन में बहुत सा धन दान का आता है परन्तु गोरक्षा १) रुपयामें एक पाई होती है। और ६ फी सदी गौशालाओं में रुपया होते हुये भी प्रबन्ध की कमी से गौवों को बड़े २ दुःख होते हैं यह स्वयं मैं ने कई एक गौशालाओं में दिन और रात के समय जा जा कर देखा है।

(ख) इस समय कई एक गौशाला तो टूट गई हैं। जो शेष हैं उन में उन के संचालक जो धर्म के भाव से कार्य करते हैं दुःखी हो रहे हैं। अतः इन का सुधार होना चाहिये यह संस्था तो बनी बनाई हैं और इन में धन का जरिया भी अच्छा है इन में निम्न कमियां हैं।

(१) किसी भी रईस या अफसर पर इस का भार रख दिया जाता है। वह किसी न किसी विचार को ले कर आप सभा पति या मैनेजर बन जाते हैं। परन्तु वह इस कार्य में पूरा समय नहीं देते।

(२) गौशालाओं में सेवक एक तो अच्छे नहीं मिलते जो कुछ अच्छे होते भी हैं तो उन के संग से खराब हो जाते हैं। उन के खराब होने से गौओं को बड़ा कष्ट होता है उनको पूरा चारा नहीं मिलता, गौवों को कव्वे खाते हैं गौ दड़ी पड़ी

सड़ती है, वह दुष्ट उन को ज़हर तक भी दे देते हैं इत्यादि उन को बड़े २ कष्ट देते हैं।

(६) अधिकतर गौशालायें नगरों में होती है। कुछ नाम के कारण,कुछ आमदनी बनी रहे उन को नगर में रखनी पड़ती हैं। कोई अधिक इस पर सोचता भी नहीं। अतः उन का व्यय बहुत होता है।

(ग) इस का सुधार यह हो सकता है कि प्रतिनिधी सभा कोई गोचर भूमि चाहे क्रीत चाहे किराये पर लेवे। उस की निकट की गोशालाओं को उस में सम्मिलित करें। उन्हीं की गौ उस गोचर भूमि में रक्खे। आस पास की गौशालायें इस में सम्मिलित हो जावेंगी। क्योंकि उन का जो इस समय व्यय होता है उस से आप एक तिहाई या आधा भी ले लेंगे तो प्रतिनिधि को लाभ होगा। हमने भटिण्डा गौशाला की गौवें बड़ोपल रियासत बीकानेर में सत्ताईस मास रक्खी थी। उस का ठीक हिसाब "गौरक्षा स्कीम" पृष्ठ १८-१९-२० में दिया है। देहली गौशाला की गौ भी यहाँ पास ही के जङ्गल में रहती हैं उस में बहुत कम खर्च आता है। नगरों में जो लोग गौ रखते हैं वह अपनी दूध से हटी हुई गायों को बड़ी प्रसन्नता से देंगे और पूरा खर्चा भी देंगे। उन को यदि यह आराम हो जावेगा तो वह गौ अवश्य रक्खा करेंगे। यह कार्य भी मैंने

एक वर्ष किया है। इस कार्य को यदि कोई आर्थिक दृष्टि से भी करे तो भी बड़ा लाभ है।

(४) गौवों का बधिकों के हाथ में जाना और बिदेश में चमड़ा जाना।

हिन्दु महासभा के प्रस्ताव में गोरक्षा धारा (क) में लिखा है "कि गौवों को बधिकों के हाथ से बचानी चाहिये" यह प्रस्ताव है तो बड़ा ही श्रेष्ट परन्तु कठिन भी बहुत है क्योंकि प्रधान बधिक तो बहुधा हिन्दु ही हैं वह इतने प्रकार के हैं।

(क) देहातों में सीधे सादे किसान चाहे वह निर्धन भी हैं परन्तु वह बधिकों को गौ नहीं देते हैं। परन्तु अधिकतर जनेऊ पहिने तिलक लगाये .जान पहिचान वाले ब्राह्मणों के घरों में उत्पन्न हुए बधिक ही करते हैं। वह गावों से गौ ख़रीद कर बधिकों को देते हैं

(ख) गौ भैंसों का व्यापार इस समय बहुधा विधर्मियों के हाथ में है। उन व्यापारियों को कोई तो बधिकों को भी, वैश्य कह लाने वाले बधिक व्याज के लोभ से रुपया दे देते हैं। लोभ वश उन का हृदय इतना कठोर हो गया है कि समझाने पर समझ बूझ कर भी वह नहीं मानते हैं उन की ब्रादरी कुछ दण्ड नहीं देतो नाते रिश्ते नहीं रुकते।

(ग) कई धूर्त साधु ब्राह्मण बन कर गौशाला और गोरक्षा के नाम पर मांगते फिरते हैं मैं ने एक यवन साधु वेष मे पकड़ा था और कई हिन्दू भी पकड़े हैं। आज कल कई आदमी चलती रेल गाड़ियों में शहरों में मण्डियों में गोरक्षा को संदूकची चपरास इत्यादि लिये फिरते हैं और अच्छे २ भजन भी सुनाते हैं। लोगों को मोहित करने की अनेक बातें करते हैं वह बहुधा ठग ही होते हैं गौ माता के नाम पर मांग कर अपना और अपने कुटुम्ब का भरण पोषण करते हैं। इस का बुरा प्रभाव यह भी होता है कि अच्छी संस्थाओं को भी बुरी समझते हैं बस वही बात ठीक हो रही कि जहां अपूज्य पूजे जाते हैं और पूज्यों का अनादर होता है। ऐसा देश अधोगति को जाता है। इस में मुख्य बात यह है कि अन्याय से दबना भीरुपन और अन्याई पर दया करना यह दोष प्रथम तो बहुधा हिन्दुवों में ही हैं परन्तु मेरी जाति के मारवाड़ी वैश्यों में विशेष रूप से है। मारवाड़ी अग्रवाल सभा गौ रक्षा के प्रस्ताव पास करती है उस में भी यह प्रस्ताव भेजा जाना उचित है। अन्याय का पूरा विरोध करना चाहिये और दुष्ट पर मूर्खता की दया करना पाप है।

(ङ) कलकत्ता आदि बड़े २ नगरों में अच्छी २ नशल की, कीमती गायें हिसार आदि से जाती हैं। उन के बच्चे उन से तुरन्त अलग कर दिये जाते हैं। उन के दूध से लाभ उठा

कर साल डेढ साल में वह गौ भी वहां के हिन्दू ग्वाले बधिकों को देदेते हैं। इस से अच्छी नशल की गौवों का वध होता है इस का हंसा नन्द जी वर्मा ने बहुत प्रचार तथा प्रयत्न किया है। उन के साथ जब मैं कलकत्ता गया तो यह सब दुर्दशा देखी। साहब गंज आदि स्थानों में जाकर देखा कि यहां पर गोचर भूमि बहुत है यह जगह कलकत्तासे अंदाज १५० मिल है। ऐसे ही कलकत्ता आदि बड़े नगरों के आस पास चरा गाह मिल सकते हैं। बड़े नगरों मे दूध से हटी हुई गायों को ग्वाले २५)-३०) रुपया में बधिकों को बेच देते हैं। वह आप कोतो और भी कम मूल्य में दे देंगे। उन को सौ सवासौ मील लाने में कोई चार पांच रुपया खर्चा लगता है यदि उन गायों को १२ महीने चरागाह ले कर रक्खे तो एक वर्ष में वह ब्या जावेंगी। जो उन में बढ़िया नशल की हैं वह अधिक मूल्य में भी धनी पुरुष ले लेंगे। इस प्रकार से बढ़िया नशल की गौवें बच सकती हैं।

(च) चमड़े का व्यवसाय गवरन्मेण्ट के हाथ में है। बम्बई आदि नगरों में हजारों गौ चमड़े के लोभ से नित्य मारी जाती हैं। यदि गवरन्मेण्ट से प्रार्थना की जावे तो इस प्रकार से भी बहुत गौवें बच सकती हैं और फौजों के लिये भी गवरन्मेण्ट ही गोवध रोक सकती है इस के लिये भी सरकार से प्रार्थना करनी चाहिये।

हम ने कलकत्ता से एक वार १५ गौ स्वामी हंसानन्द की मारफत साहबगंज भिजवाई गई थी वहां मेरा भाई गङ्गा-प्रसाद जी दादरी वाले ने कुछ गौवें तो अच्छे आदमियों को दे दी कुछ गौशाला में रक्खी वह कहते थे उन में अधिक गौ ब्याई थी और अच्छा दूध दिया था कोई महानुभाव इस कार्य को करें तो वहां से उन का सारा हाल मालूम हो जावेगा।

५ निःस्वार्थ उपदेशकों का अभाव।

(क) अच्छे २ स्वार्थ हीन पुरुष यदि ग्राम ग्राम में जाकर उपदेश करें और मनुष्यों को शास्त्र द्वारा गो माता की रक्षा का महत्व बतलावें तो इस से भी गो रक्षा करने में बड़ा लाभ हो सकता है।

(ख) चाहे किसी प्रान्त की हिन्दू सभा में अथवा किसी अच्छी गौ शाला में तीन ऐसे पुरुष रक्खे जावें जिन में १ तो बहुत अनुभवी पढा लिखा और गोरक्षा से पूरा प्रेम रखता हो। दूसरा वेटरनरी डाक्टर। तीसरा पशुवों की देशी औषध जानने वाला हो यह तीनों पुरुष निम्न कार्य करें।

१. उपरोक्त समस्त कार्यों को निरन्तर प्रचार द्वारा करके दिखलावें॥

२ गौशालाओं का संगठन करें।

३. आस पास की गौशालाओं का सुधार तथा डाक्टरी

काम भी करें तथा और भी उस के आस पास चिकित्सा करें

४ गौ पालन विधि की पुस्तकें छपवाई जांय और वह इन्हीं के जुम्मे लगाई जांय कि वह ग्राम २ में बांटी जांय। इन की रेख देख गोरक्षा की समिति करें उस समिति में न्यूनाति न्यून दो तीन श्रेष्ठ पुरुष अपना जीवन देवें।

६ मुसलमानों की हठ धर्मी ।

मुसलमानों की हठ धर्मी से भी बहुत गौवें मारी जाती हैं। यदि अच्छे २ उपदेशक मुसलमानों को प्रेम से समझावें हमदरदी से समझावें तो उन में से भी बहुत से समझ सकते हैं और वह और मुसलमानों को भी समझा सकते हैं। इस से भी गौरक्षा मे बहुत ही लाभ हो सकता है।

७ अकाल ।

अकाल के कारण से निर्धन पुरुष गौ रखने में असमर्थ होने के कारण बेच देते हैं। अतः इस से भी अधिक गो बध होता है। इस के दो उपाय हो सकते हैं। प्रथम तो ग्राम ग्राम में उत्तम बटादि उपयोगी वृक्ष लगाये जांय। जलाशयों से वृक्ष शीघ्र होंगे वृक्षों से वर्षा को सहायता मिलेगी जिस से अकाल पड़ने की सम्भावना कम होगी दूसरे यदि ईश्वरेच्छा से कभी अकाल पड़ भी जाय तो अकाल से सुकाल में गौ भिजवाने का प्रबन्ध किया जाय। और सुकाल से अकाल में

चारा मंगावाने का प्रबन्ध किया जाय । इस से अकाल के समय में भी बहुत गोरक्षा हो सकती है । यह कार्य भी मैंने २ बार अकालों में अकाल गो कष्ट निवारिणी सभा में किया

८ गो पालन विधि का न जानना ।

बहुत्रा मनुष्य गौ पालन विधी को नहीं जानते हैं । इस के सम्बन्ध में वेटनरी डाक्टरों तथा वैद्यों और डेयरी फार्मो से कुछ अच्छी औषधियों का संग्रह करके एक गोपालन की विधी का छोटा सा ट्रेक्ट निकाला जाय इस पुस्तक का प्रचार किया जाय और प्रत्येक ग्रामों में उस के बांटने का प्रबन्ध किया जाय । आज कल ग्रामों का तो कहना ही क्या है मुझे एक बार सम्वत् १९८१ में सांभरमती आश्रम में जाने का सौभाग्य हुआ वहां महात्मा गांधी जी के दर्शनों के पश्चात आश्रम की गौशाला भी देखी तो गौवों के चारे में रेत था और छोटे बछड़े इतनी तङ्ग जगह में बैठे थे कि वह बहुत ही तकलीफ पाते थे । मैं ने देवी दास जी को समझाया तो उन्होंने कहा कि मैं तो इस विषय में कुछ जानता ही नहीं और आदमी अच्छे नहीं मिलते । मैं ने यह बात श्री कालेलकर जी को भी ठीक तरह समझा दी थी अब वहां तो श्री महात्मा जी पूरा प्रयत्न कर रहे हैं अतः इस के विषय में ट्रेक्ट छाप कर बांटा जाना चाहिये । जहाँ गौ रहती हों वहाँ विशेष कर दूध निकालने के

समय गोपालों को चाहिये कि उत्तम स्वर में मुरली बजाई जाय। इस से गौ प्रसन्न होंगी और दूध भी अधिक होगा। भगवानश्री कृष्ण जब गौ चराते थे तो बंशी बजाते थे उस का एक कारण यह भी था कि इस से गौवें प्रसन्न रहती थीं। जब वह मधुर बंशी को टेर सुनती थीं तो सब प्रसन्न हो कर इकट्ठी हो जाती थीं।

मेरे मित्र जो अब सन्यासी हैं उन से मैं ने सम्मति ली गौ रक्षा के विषय में, तो उन्हों ने कहा कि "जब पं० मदन मोहन मालवी जी, पं० दीन दयाल जी, ला० लाजपत राय जी भाई परमानन्द जी आदि सज्जन संन्यास ले कर इस कार्य को करेंगे तब ही गौ रक्षा हो सकती है अन्यथा व्यर्थ में कागज़ पत्रों में ही प्रस्ताव पड़े रहेंगे"।

इति शुभम्।

भूमानन्द ब्रह्मचारी के प्रबन्ध से "भक्ति प्रेस" श्री भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी) में मुद्रित।

नोट:—

देश से हड्डी नहीं जानी चाहिये गोबर हड्डी यह देखते ही ज़मीदारों को दबा देनी चाहियें अन्यथा खेत का देवता अप्रसन्न हो कर कृषक को शाप दे देता है।

गोचर भूमि के छुटाने के लिये कम मनुष्यों को विवाह कराना चाहिये। निर्बलों और रोगियों को तो बिलकुल नहीं करानी चाहिये।

अच्छो २ घासों के बीज संग्रह कर के जंगलों में लगानो चाहियें।

चमड़ा जहां तक हो सके कम खर्च करना चाहिये।

शब्द

मत मारो बेदरदी कारी गैया हूं ॥ टेक ॥

दूध पिलाय मैंने तुम को है पाला, अरे इस नाते से मैया हूं ॥१॥
दूध दही मैं तुम को देतो, सुख की आप खवैया हूं ॥२॥
बैल मेरे हल कूवों में चालें, अरे मैं भारत बोझ खिवैया हूं ॥३॥
गरुड़ पुराण में लिखा हुवा है, बैतरणी की नैया हूं ॥ ४ ॥

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये पांच कूप और एक तालाब है। २५० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगा कर उपवन बनाया गया है। आश्रम से लगी हुई ४०० बीघा भूमि गौओं के चरने के लिये श्री० लेफ्टीनेन्ट राव बहादुर राव बलवीर सिंह जी ने आश्रम को प्रदान की है। इसी भान्ति दादरी, गढ़ीबोलना, जोड़िया, [illegible], निम्बरी, नूरगढ़, खोयरी, पालम, भटिण्डा, आदि अन्य स्थानों में आश्रम को कई सज्जनों ने भूमि प्रदान की है उन में वृक्ष व जलाशय बनाये गये हैं॥

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, कन्या पाठशाला व अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियों के ठहरने का स्थान पुस्तकालय व औषधालय भी है।

निवेदक

भूमानन्द ब्रह्मचारी

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)